र्डिंग महिंग का लार्विति निष्म जारिन उता

O जीन को आनुवंद्वाका ईक्ताई क्यों कहते हैं।

उत्तर जीन विशिक लक्षणों को एक पियी से युसरी पीकी में कि जाती है। जीनी में उपापचण कुछि छव जनन से संबिश्चित सारी सुचनाचे संज्ञहित रहती है। अतः इस छानुवंदिन ठकाई कहा जाता है।

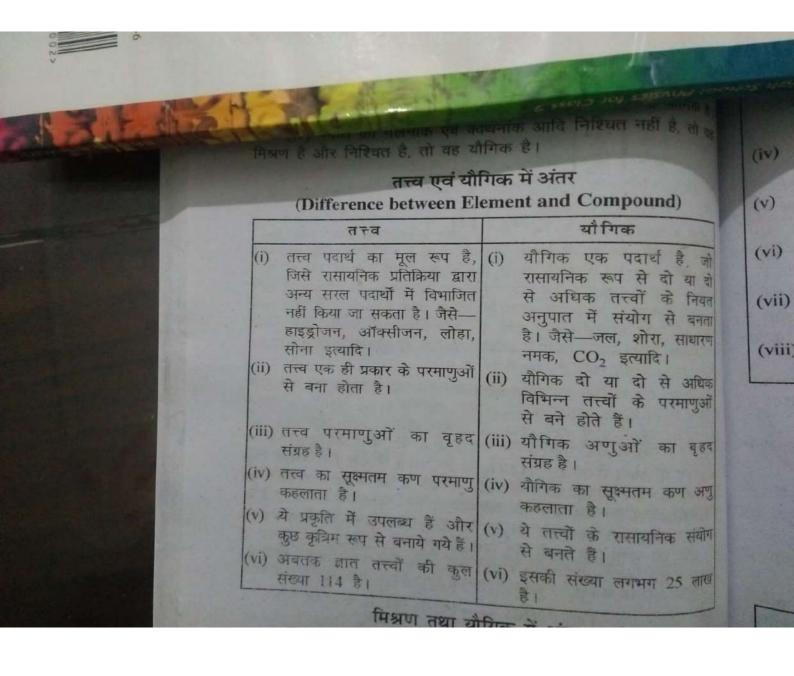
@ संथोजी अत्रक से आप क्या समझते हैं १ इनके कार्यों की लिखे

असर के स्ट्रेंस असका जी असीर के अंगी तमा संरचना की जोड़ने

(का) भी अंभी तथा बारीरीक स्रियानाङ्गी की जीड़ी है। (व) भी अंभी तथा अन्य अत्की के चारी और रक्षात्क आका

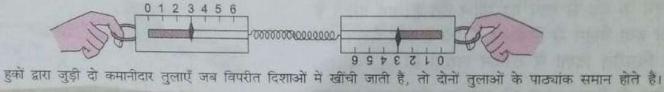
अ लिका से आप क्या समझते हैं।

उत्तर के लसीना राम तरण पदार्थ है। जो अगरर कि कोशियां भी किना, गुल्मकीज, जाल, रामिनी अम्ल, को सिकार्य पार्थि जो है। वह रंगहीन होता है। असमें हैं। यह जिल हारिसी के अगरर में राम निम्मिलियित हैं। होता दें। उसमें होता दें। असे विस्ता के अगरर में राम निम्मिलियित हैं।



41

बल तथा गति के नियम



व्यक्त कर सकते हैं—

HIS

夏草

), त

प्रत्येक क्रिया के वरावर और विपरीत प्रतिक्रिया होती है।

न्यूटन के तृतीय गति नियम को प्रदर्शित करनेवाले प्रयोग

1. दो कमानीदार तुलाओं द्वारा तृतीय गति नियम का प्रदर्शन इसके लिए हम दो कमानीदार तुलाएँ (spring balances) लेते हैं और उनके 'हुकों' (hooks) को एक-दूसरे से फंसा देते हैं, जैसा कि चित्र 3.13 में दिखाया गया है। हम तुलाओं को अब विपरीत दिशाओं में खींचते हैं। हम देखेंगे कि दोनों तुलाएँ समान पाठ्यांक (readings) सूचित करेंगे। इससे स्पष्ट होता है कि एक तुला का दूसरी तुला पर क्रिया बल और दूसरी तुला का पहली तुला पर प्रतिक्रिया बल परिमाण में बराबर है और दिशा में विपरीत हैं। इस प्रकार न्यूटन के तृतीय गति नियम का प्रदर्शन हो जाता है।

प्रक्षी

3.

3. धागे टेप पेय

पेय लंब

> कर बाँभ